Handout PDF study Material (ve aankhein) Module-1

कक्षा- ग्यारहवीं,विषय- हिन्दी (केंद्रिक)

पाठ्यपुस्तक- आरोह (भाग-1)

काव्य–खण्ड(अध्याय-4)

कविता – वे आंखे (सुमित्रानंदन पंत)

प्रस्तुतकर्ता

मिथिलेश कुमार झा

पऊकेवि-4 रावतभाटा

कवि-परिचय (सुमित्रानंदन पंत)

मूल नाम – सुमित्रानंदन पंत का मूल नाम गोसांई दत्त है ।

जन्म – पंतजी का जन्म सन 1900 में गांव कौसानी , जिला अल्मोड़ा ,उत्तरांचल में हुआ था ।

शिक्षा – इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कौसानी में तथा उच्च शिक्षा बनारस और इलाहाबाद में हुई ।

प्रमुख रचनाएं –वीणा, ग्रंथि ,पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या, चिदम्बरा, उत्तरा, स्वर्ण-किरण, कला और बूढा चांद, लोकायतन आदि इनकी प्रमुख काव्य-कृतियां हैं।

सम्मान – 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' , 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' , 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा 'पद्मभूषण पुरस्कार' से इन्हें सम्मानित किया गया ।

सम्पादन – उन्होंने 'रूपाभ' पत्रिका का सम्पादन किया ।

विशेषता- पंतजी छायावाद के श्रेष्ठ कवि हैं । प्रकृति-चित्रण के अद्भुत रचनाकार होने के कारण इन्हें प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है ।

मृत्यु- 1977 में पंत जी का निधन हो गया ।

कविता का मूल –भाव

*प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित 'वे आंखे' कविता वर्षों से शोषण का शिकार होते किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन करती है जिसमें स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत भी कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिया।

*किसान का व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन दोनों इस समस्या से त्रस्त हैं। यह कविता विकास की इसी कथनी एवं करनी के भेद पर करारा व्यंग्य है ।

कविता का सारांश

इस कविता में कवि ने स्वतन्त्रता से पूर्व किसानो की दुर्दशा का चित्रण किया है। किसान की आंखे सदा दुख और दीनता से भरी रहती हैं । कभी वह स्वाधीन था । उसे उसकी जमीन से बेदखल कर दिया गया ।

महाजन ने क्रूरतापूर्वक उसके पुत्र को मरवा डाला । उसके घर-द्वार बिकवा डाले । खेत तक नीलाम करवा डाले ।ब्याज के लिए उसने सब अत्याचार किए। उसकी पत्नी बिना दवा के मर गई और दुधमुंही बेटी दूध के अभाव में चल बसी ।

उसकी पुत्रवधू को 'पति घातिनी' होने का कलंक मिला ।एक दिन उसे भी थानेदार ने बुलवा भेजा । अगले दिन वह कुएं में डूबकर मर गयी । इन सब अत्याचारों की याद कर–करके किसान की छाती फट जाती है ।

“वे आंखें” कविता के शब्दार्थ

1.गुहा=गुफा, दारूण=भयानक, दैन्य=गरीबी, नीरव=मौन, रोदन=रोना ।

2.स्वाधीन=स्वतंत्र,मंझधार=धार के मध्य,समस्याओंकेबीच,कगार=किनारा।

3.दृगों में=आंखों में, बेदखल=अधिकार से वंचित, तृण=तिनका ।

4.आंखों का तारा=बहुत प्यारा, कारकुन=जमींदारों के कारिंदे ।

5.महाजन=ऋणदाता, आंखोंमेंचुभना=बुरा लगाना,कुर्क=नीलाम,बरधों=बैलों।

6.उजरी=उजली, अह=आह, आंखों में नाचना= बार-बार सामने आना।

7.दवा दर्पण=दवा पथ्य आदि, घरनी=पत्नी, दुधमुंही=नन्हीं।

8.यद्यपि =यदि ऐसा है भी, पति घातिन=पति की हत्या करने वाली ।

9.जोरू=पत्नी,सुध=याद,सांप लौटते=जलन होती,फटती छाती=अति दुख होता ।

10.स्मृति=याद, शून्य=आकाश चितवन=दृष्टि , क्षण भर=पल भर।

‘वे आखें’ कविता की व्याख्या

1 अंधकार की गुहा सरीखी उन आंखों से डरता है मन,

भरा दूर तक उनमें दारुण दैन्य दुख का नीरव रोदन !

व्याख्या- भारतीय किसान की आंखें मुझे एक अंधेरी गुफा के समान भयानक लगती है । उसकी शून्य आंखों में देखने में भी भय लगता है । उन आंखों में भयानक गरीबी का दुख और उनका चुपचाप गरीबी को सहने का मौन रुदन व्याप्त है ।

2 वह स्वाधीन किसान रहा अभिमान भरा आँखों में इसका ,

छोड़ उसे मँझधार आज संसार कगार सदृश बह खिसका !

व्याख्या- भारतीय किसान कभी स्वाधीन था । उसके पास अपने कुछ खेत थे । उसकी आँखों में स्वाभिमान था । तब समाज में उसकी मान मर्यादा थी । परंतु आज उसका स्वाभिमान उसे छोड़कर ऐसे विलीन हो गया है, जैसे कोई रेतीला किनारा टूट कर नदी के प्रभाव में बह जाता है ।

3 लहराते वे खेत दृगों में हुआ बेदखल वह अब जिनसे ,

हँसती थी उसके जीवन की हरियाली जिनके तृन-तृन से !

व्याख्या- किसान की आँखों में आज भी वे लहलहाते खेत झूम उठते हैं ,

जिनसे उसे वंचित कर दिया गया है । सूदखोर सेठों ने थोड़े से ऋण के बदले उसकी सारी खेती को हथिया लिया है । उन खेतों का एक-एक तिनका उसे इतना प्यारा था कि उसे देखकर किसान के जीवन में मानो हरियाली छा जाती थी ।

उसका मन प्रसन्न हो उठता था । (पर खेत छीन लिए जाने के कारण अब वह दुखी है) ।

4 आंखों में ही घूमा करता वह उसकी आंखों का तारा ,

कारकुनों की लाठी से जो गया जवानी में ही जो मारा !

व्याख्या – किसान का प्रिय बेटा जवानी की ही अवस्था में साहूकार के कारिंदों द्वारा लाठियों के निर्मम प्रहारों से मार डाला गया । अपने प्रिय बेटे की वह क्रूर हत्या आज भी उसकी आंखों के सामने प्रत्यक्ष होकर नाचने लगती है ।

5 बिका दिया घर द्वार , महाजन ने न ब्याज की कौड़ी छोड़ी,

रह - रह आंखों में चुभती वह कुर्क हुई बरधों की जोड़ी !

व्याख्या- महाजन ने अपने धन और ब्याज के लिए किसान की घर–संपत्ति सब नीलाम कर डाली । उसे घर से बेघर कर दिया,किन्तु अपने ऋण का ब्याज एक–एक पाई करके चुका लिया । उसे किसान की दयनीय अवस्था को देखकर जरा भी दया नहीं आई । उसने उसकी प्रिय बैलों की जोड़ी को भी उसके देखते–देखते नीलाम कर दिया । किसान विवश होकर उसे नीलाम होते देखता रहा, कुछ कर नहीं पाया । आज भी बैलों की नीलामी की वह स्मृति उसके मन में वेदना जगा रही है ।

6 उजरी उसके सिवा किसे कब पास दुहाने आने देती ?

अह , आंखों में नाचा करती उजड़ गई जो सुख की खेती !

व्याख्या –किसान को उजली गाय से बहुत प्रेम था । गाय भी उससे स्नेह रखती थी । किसान की उजली गाय उसके सिवाय अन्य किसी को भी अपने पास दूध

दुहने के लिए नहीं आने देती थी । उसकी आंखों के सामने आज भी गाय का स्नेह उमड़ पड़ता है । हाय ! बेचारे किसान का सुखमय संसार आज उजड़ गया है ,परंतु उसे उसकी याद बरबस आती रहती है ।

7 बिना दवा दर्पण के घरनी स्वरग चली, आँखें आती भर ,

देख–देख के बिना दुधमुंही बिटिया दो दिन बाद गयी मर ।

व्याख्या – किसान की पत्नी दवा के अभाव में ही मर गयी । यह सोचकर उसकी आँखें आँसुओं से भर जाती हैं । पत्नी की मृत्यु के पश्चात दूध पर आश्रित उसकी नन्हीं बिटिया की समुचित देखभाल नहीं हो पायी । अतः उस बेचारी की भी अकाल मृत्यु हो गयी ।

8 घर में विधवा रही पतोहू , लछमी थी,यद्यपि पति घातिन,

पकड़ मंगाया कोतवाल ने , डूब कुएं में मरी एक दिन !

व्याख्या – उस किसान के घर में उसकी विधवा पुत्रवधू शेष बच रही थी । यद्यपि उसे पति की हत्या का कारण समझा जाता था,पर अब वही इस घर की गृह-लक्ष्मी के समान थी। उसे भी एक दिन कोतवाल ने बुलवाकर अपनी वासना से भ्रष्ट कर दिया । इससे वह लाज के मारे कुएं में कूद कर मर गई । (किसान अकेला रह गया) ।

9 खैर , पैर की जूती ,जोरू न सही एक , दूसरी आती ,

पर जवान लड़के की सुध कर सांप लोटते,फटती छाती !

व्याख्या – पत्नी मरी , तो मरी। उसका मरना उतना कष्टकर नहीं था। किसान दूसरी पत्नी भी ला सकता था । परंतु जब उसे अपने जवान लड़के की हत्या हो

जाने की याद आती है , तो उसकी छाती पर सांप लोटने लगते हैं । वेदना के मारे उसकी छाती विदीर्ण हो जाती है ।

10 पिछले सुख की स्मृति आंखों में क्षण भर एक चमक है लाती ,

तुरत शून्य में गड़ वह चितवन तीखी नोक सदृश बन जाती ।

व्याख्या- किसान जब अपने गत सुख को याद करता है तो उसे क्षण भर के लिए सुख और आनंद मिलता है । उसे अपने खेत,गाय,पुत्र ,पत्नी,बिटिया,पुत्रबधू की कल्पना सुख देने लगती है,किंतु जब एक–एक करके सबके नष्ट होने की याद आती है,तो वे सब स्मृतियां उसके लिए दुखदायी बन जाती हैं।

———————